तृतीय अध्याय

'ऐतिहासिकता और आधुनिकता के सम्बन्ध में ---
'वितस्ता की लहरें'

तृतीय अध्याय

ऐतिहासिकता और आधुनिकता के सम्बन्ध में ' क्तिस्ता की लहरें' --

एक कवि ने कहा है -- उनका भविष्यकाल अधिक उज्ज्वल होता है, जिनका अतीत बडा तेजस्वी, त्यागपूर्ण और उज्ज्वल है । जिस प्रकार कोई भी भवन पक्के नींव पर खडा होता है उसी तरह हो व्यक्ति या समाज का जीवन भी अतीत पर आधारित होता है । केवल ऐतिहासिक सूचना को जानकर हमें उतना संतोष नहीं होता जितना की ऐतिहासिक कलाकृति को देखकर होता है । इतिहास की घटनाएँ साहित्य के द्वारा अधिक सुन्दर, अधिक प्रभावी रूप में समाज मानस को संस्कारित करती है ।

प्रख्यात इतिहास विद्वान गिबन ने कहा है --

"History is the biography of great men "

(इतिहास मुर्दों की नहीं, मर्दों की कहानी है ।)

तात्पर्य यह, कि इतिहासकालीन गुणविशेष आज भी हमारा मार्गदर्शन कर सकते हैं, इस विषय में प्रख्यात अंग्रेजी कवि लॉगफेलो ने कहा है -- ' महापुरुषों की जीवनियाँ हमें बताती हैं, कि हम भी अपनी जीवन तरह महान

बना सकते हैं, जिसप्रकार रेती में पैरों के निशान देखकर हम जान सकते हैं, कि किस दिशा में यह प्राणी चला गया, उस दिशा का अनुसरण हम भी करते हैं, महापुरुषों के कार्यों के अवशेष उनकी मृत्यु के बाद भी आगे की पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शक बनते हैं ।

> " Lives of great men all remind us,
> We make our lives sublime,
> And leaving behind they depart,
>
> Footprints in the Sands of time "
>
> \- Long Fello

लक्ष्मीनारायण मिश्र का ' वितस्ता की लहरें ' नाटक ऐतिहासिक होते हुए भी इसमें हमें अनेक बातों में आधुनिकता के विचार परिलक्षित होते हैं ।

१) देशभक्ति --

युध्द की स्थिति में देश [illegible] होना आवश्यक रहता है । लक्ष्मीनारायण मिश्र ने कथा - संकेत में लिखा है -- " इतिहास के किनारों पर जहाँ दूसरी प्राचीन संस्कृतियों के ध्वंस-चिन्ह छितराये पड़े हैं और उन्हें अपना कहने वाला आज कोई नहीं है, ऐसी दशा इतनी लम्बी अवधि में हमारी नहीं हुई । हर ध्वंस की नींव पर यह देश नया निर्माण करता रहा है । "[१]

[illegible] सुन्दर से सामना करने के लिए विष्णुगुप्त ने तक्षशिला के विद्यापीठ के कईं छात्रों को संगठित किया तथा उनके माध्यम से सारी जनता में भी जागृति की । आज भी विष्णुगुप्त [illegible] जानता है । इस प्रकार वितस्ता के तट पर दो विभिन्न [illegible] और संस्कृतियों का टकराव हुई थी जो अपने जीवन दर्शन में एक-दूसरे के विपरीत थी । यवन सैनिकों में विजय का उन्माद था तो पुरु और कैकय जनपद के नागरिकों में देश के धर्म और पूर्वजों के

---

१ वितस्ता की लहरें - कथा-संकेत - लक्ष्मीनारायण मिश्र - पृ. ६ ।

आज भी युध्द के अनेक दुष्परिणाम को मिटाने के लिए गांधीवाद का अनुसरण करना चाहिए ।

इस प्रकार ' वितस्ता की लहरें ' में यवन संस्कृति का पर्याप्त दोष दर्शन करके भारतीय संस्कृति को मिश्र जी ने उच्च स्थान पर बैठाया हैं । नाटक में उग्र राष्ट्रीयता का दर्शन कराया हैं ।

२) नारी के प्रति दृष्टिकोन --

भारतीय संस्कृति मे नारी को उच्च स्थान दिया गया हैं । मिश्र जी ने ' वितस्ता की लहरें ' नाटक में प्राचीन काल की नारी के प्रति किस समाज का दृष्टिकोन क्या था और आधुनिक काल में भी इस प्रकार के विचारों की किस प्रकार जागरत हैं, इसपर प्रकाश डाला हैं । भारतीय संस्कृति में स्त्री को देवी माना हैं । उदा. महाराज पुरु कहते हैं ' अबला के धर्म की रक्षा जिस धरती पर न हो उस धरती को रसातल में समा जाना चाहिए । ' इस प्रकार आधुनिक युग में भी स्त्रीयों पर जो अन्याय, अत्याचार [illegible] हैं, उन्हें मिटाना चाहिए । विचार मिश्र जी ने प्रतिपादित किया हैं । इस प्रकार [illegible] के युवक जब तारा का हरण करते हैं और अलिकसुन्दर जब शोक करता है [illegible] कहती हैं ' इस देश के निवासी पराई स्त्री को माता मानते हैं, [illegible] आँखों में सीधे किसी ने देखा भी नहीं । इस प्रकार प्राचीन काल से भारतीयों [illegible] के प्रति कितनी आदर भावना थी यह स्पष्ट होता हैं । तारा का [illegible] माता का सम्मान मिला । किसी ने उसपर कुदृष्टि [illegible] हैं । मिश्र जी ने भारतीय संस्कृति में नारी का गौरव किया हैं ।

४) व्यक्तिगत स्वचरित्रता --

' वितस्ता की लहरें ' में [illegible] स्वचरित्रता का उद्घाटन करके आधुनिक विचारों का प्रतिपादन किया है । मिश्र जी ने विष्णुगुप्त के चरित्र में उसकी मेधा का वर्णन किया हैं और आज के राजनैतिक परिस्थिति पर प्रकाश डाला हैं । अपनी राजकीय कूट नीति का कथन करते समय वह कहते हैं --

आचरण की रक्षा का भार था ।

पहले से ही भारतीय युध्द नहीं चाहते । लेकिन जब कोई शत्रु छल-कपट से भारतभूमि पर आक्रमण करता है, तब भारतीय उसका प्रतिकार करने के लिए भारतभूमि की रक्षा करने के लिए शत्रु पर टूट पडते हैं । उदा. जब अलिकसुन्दर रात में छल से वितस्ता पार करता है, तब भारतीय युध्द में कूद पडते हैं । घमासान युध्द होता है और अंत में भारत विजयी होता है । आज भी भारतभूमि की रक्षा करने के लिए ऐसे ही भारतीय युवकों को यह आदर्श सामने रखना होगा ।

मिश्र जी ने इस नाटक में भारतीय संस्कृति का गौरव गान किया है । उन्होंने इतिहास तथा संस्कृति का समन्वय करने का प्रयत्न किया है । आज भी उन्होंने भारतीयों अपनी संस्कृति के आदर्शों को सामने रखने की ओर उन्होंने इशारा किया है । नाटक के स्त्री पात्रों के मन में भी देशभक्ति की भावना भरी हुई है । उदा. रोहिणी कहती है[1] -- ' देश की स्वाधीनता को बेचनेवाला अपनी राज्य-लक्ष्मी को नंगी करनेवाला आम्भि आज महाराज नहीं है । वह देश की स्वाधीनता को बेचनेवालों का स्वागत नहीं करती । स्वाधीनता याने स्वैराचार नहीं है. इस प्रकार मिश्र जी ने प्रतिपादित किया है । इस आधुनिक विचार का आज हमारे लोकशाही देश में बडा महत्व है । आज प्रत्येक राष्ट्र आपस में झगडते रहते हैं । धर्म के नाम पर, जाति के नाम पर, मिश्र जी ने इस विचार पर भी प्रकाश डाला है । विष्णुगुप्त के मत से यह विचार उन्होंने स्पष्ट किया है जिस विचार का आधुनिक युग में बडा महत्व है -- विष्णुगुप्त के भारत की कल्पना उसके छोटे टुकडों के रूप में नहीं करता, उसकी भावना सम्पूर्ण भारत को एक विशाल राष्ट्र के रूप में देखता है और उसी विशाल राष्ट्र की स्थापना के लिए वह प्रयत्नशील है । आज भी प्रत्येक भारतीय युवक को इस विचार का अनुकरण करना चाहिए ।

नाटक पर गांधीवाद का प्रभाव दिखाई देता है । पुनः रक्तपात और शस्त्र से अधिक उपयोगी दया और शील को बताते हुए कहते हैं -- ' शस्त्र से जो सम्भव नहीं, उससे कहीं अधिक दया और शील से सम्भावित है । '[2] इस प्रकार

---

१ वितस्ता की लहरें - लक्ष्मीनारायण मिश्र - पृ. २४ ।

२ वही - पृ. ११५ ।

" जब वह गंगा पार कर पूर्व की ओर बढ़े, उसी समय इधर हम सिन्धु का मार्ग उसके लिए रोक दें। पश्चिम की सहायता उसको न पहुँचे पाये।[1] " इस प्रकार विष्णुगुप्त के मेधा का प्रदर्शन कर उसके कूट नीति एवं महत्त्वाकांक्षी देशप्रेमी स्वभाव गुण को स्पष्ट किया है। विष्णुगुप्त भारत की कल्पना उसके छोटे छोटे टुकडों के रूप में नहीं करता, उसकी भावना सम्पूर्ण भारत की एक विशाल राष्ट्र की स्थापना के लिए वह प्रयत्नशील है। इस प्रकार यह आधुनिक विचार राजकीय लोगों को अनुकूल है। राष्ट्र-राष्ट्र में जो झगडे, भेदभाव दिखाई देता है ऐसा न होकर समूचा भारत ही एक राष्ट्र है ऐसी भावना आज के युवकों के मन में फैला दी जानी चाहिए।

नाटक का नायक पुरु की कर्तव्यपरायणता, निर्भिकता, साहसी राजा के रूप में चित्रित किया है। उसके चरित्र पर गांधीवाद का प्रभाव दिखाई देता है। आज भी भारत शांतता चाहता है। वह युध्द नहीं चाहता यह आधुनिक विचार पुरु के कथन से स्पष्ट है " शस्त्र से जो सम्भव नहीं उससे कहीं अधिक दया और शांति से सम्भावित है।"[2] इस प्रकार एक आदर्श राजा का चित्रण पुरु के माध्यम से नाटककार ने किया है।

इस प्रकार अलिकसुन्दर का चित्रण एक विजेता के रूप में किया है। चन्द्रदत्त तथा भद्रबाहु का चित्रण वीर युवक के रूप में चित्रित किया है। आदर्श पत्नि के रूप में चित्रित किया है। आदर्श पत्नि के रूप में रोहिणी का चित्रण किया है तथा आदर्श प्रेमिका के रूप में रजनी को चित्रित किया है। इस प्रकार नाटककार ने प्रत्येक व्यक्ति का स्वचरित्र चित्रण करके उसके आदर्श गुणों को आधुनिक समाज के सामने स्पष्ट रूप से प्रकट किया है।

3) [illegible]वाद की स्थापना ...

" वितस्ता की लहरें " में [illegible]वाद की [illegible] है। [illegible]

---

1 वितस्ता की लहरें - लक्ष्मीनारायण मिश्र - पृ. ७२।

2 वही पृ. ११५।

आधुनिक विचारधारा हैं । मिश्र जी ने मानव और मानव हृदय के बीच का आध्यात्मिक संबंध बताया हैं । उदा. हम पुरु का उल्लेख कर सकते हैं - युध्द में पुरु का कालनेमि हाथी अलिकसुन्दर को सूँड में पकड़कर जमीन पर पटकना चाहता हैं तब पुरु उसको हाथी के सूंड से बचा लेते हैं । और शत्रु की प्राणरक्षा करते हैं । इस प्रकार पुरु के चरित्र से मानवतावाद की स्थापना हुई हैं । पुरु के मत से वे युध्द करते हैं । कर्मभाव से शत्रुभाव कहीं नहीं होता। इस आधुनिक विचार को भी मिश्र जी ने व्यक्त किया हैं । प्रकृति के धर्म में शत्रु और मित्र का विचार वह नहीं करता । प्रकारान्तर से वह भारतीय हृदय की विशालता एवं भारतीय संस्कृति की सदाशयता का द्योतक हैं । इसप्रकार जिसके पास मानवता नहीं हैं,उस पर अपना क्रोध प्रकट करती हैं । अलिक सुन्दर के बारे में उसका यह विचार उसके शब्दों में कहे -- मानवता का रक्त बहानेवाला,रमणियों का रमणीत्व हरण करनेवाले अलिकसुन्दर को वह दैत्य समझाती हैं ।

५) सामाजिक विचार --

इस नाटक में नाटककार का उद्देश्य सांस्कृति [illegible] व्यक्त करने का रहा हैं । अत: आधुनिक काल में भी यह विचार महत्वपूर्ण हैं । मिश्र जी ने उच्चतर भारतीय आदर्शों की प्रतिष्ठा की हैं । नाटककार ने इस रचना में स्वदेश प्रेम और सामाजिक स्नेह-बंधनों की अभिव्यक्ति के संदर्भ में बौध्दिकता के स्थान पर संवेदन शील भावना को अधिक महत्व प्रदान किया हैं । कैकय राजवधू, रोहिणी कहती हैं -- " इस भूमि से बन्धन के अंकुर फूटते हैं, पति के प्रति,पुत्र के प्रति,जन जन के प्रति, पशु-पक्षी,वृक्ष के प्रति ।"[1] इस प्रकार प्रेम-बन्धन की भारतीय विशिष्टता का यह आधुनिक विचार भी स्पष्ट रूप से मिश्र जी ने प्रतिपादित किया हैं । भारतीय समाज तथा संस्कृति [illegible] में विशेष रूप से हुआ हैं । कैकय [illegible] के सामाजिक [illegible] प्रस्तुत [illegible] बडा ही स्पृहणीय हैं -- " मेरे [illegible] में चोर नहीं हैं, [illegible] और मद्यप नहीं हैं,मूर्ख कोई नहीं हैं, स्वैरी कोई नहीं हैं ।"[2] इस प्रकार रोहिणी सामाजिक

---

१ वितस्ता की लहरें - लक्ष्मीनारायण मिश्र - पृ.क्र. २४ ।
२ -- वही -- पृ.क्र. ५६ ।

जीवन का चित्र उपस्थित करती है । आज आधुनिक काल में भी इसीप्रकार का सामाजिक जीवन होना चाहिए ।

इस प्रकार लक्ष्मीनारायण मिश्र जी ने ऐतिहासिकता के पृष्ठभूमि पर लिखे हुये इस नाटक में आधुनिकता के भी विचार प्रस्तुत किये हैं । आधुनिक काल में भी वे विचार हमें मार्गदर्शक होंगे । सिकन्दर के आक्रमण के समय उत्तर भारत में अनेक छोटे छोटे राज्य थे जो आपस में ही संघर्ष करते रहते थे । यदि सभी मिलकर बाहरी शक्ति का सामना करते तो इसे कभी पददलित न होना पडता । इस आधुनिक विचार की झलक विष्णुगुप्त के कथन से स्पष्ट होती है --- ` परस्पर की लाग-डाँट में जनपद सब मिलकर एक शक्ति नहीं खडी करेंगे ,तो यवन साम्राज्य की टक्कर से इन्हें गिरना ही पडेगा । इस प्रकार राष्ट्रीयता,देशप्रेम की भावना की आज भी जरूरत है ।

[illegible] ऐतिहासिक [illegible] हुये भी [illegible] है
आधुनिक विचार दिखाई देते हैं ।